तृतीय अध्याय

शोध प्रविधीय प्रक्रिया

तृतीय अध्याय
शोध प्रविधीय प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान कार्य मेँ सही दिशा मेँ अग्रसर होने के लिए आवशयक होता है की शोध की एक व्यवस्थित रूप रेखा होता है ,इनमे प्रतिदर्श के चर की अपनी भूमिका होती है । एक अच्छा तथा उपयोगी प्रतिदर्श सम्पूर्ण का वास्तविक प्रतिनिधत्व करता है । एक अच्छा उपयोगी तथा उपयोगी प्रतिदर्श सम्पूर्ण सॅष्टी का वास्तविकता प्रतिनिधित्व करता है । प्रतिदर्श जीतने अधिक सुददढ होंगे परिणाम उतने ही परिशुद्ध । वैध एवं विश्वानीय होंगें इसके बाद उपकरण तथा चयन प्रविधि महत्वपूर्ण होती हैं जिसके आधार पर अब प्रदत का संकलन किया जाता है ।

तदुपरांत उपयुक्त संखिकीय विधि के माध्यम से प्रदत का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है प्रस्तुत का अध्याय मेँ शोध कार्य के सफल सम्पादन के लिए प्रतिदर्श ,चर ,उपकरण ,प्रदत्तो का संकनल एवं विश्लेषण हेतु प्रयुत संखिकी का वर्णन किया गया है , एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाल गया है तब कहीं जाकर एक शोध कार्य पूरा होता है ।

3.2 **न्यायदर्श एवं चयन –:** न्यायदर्श पर निर्भय करता है प्रतिनिधित्व न्यायदर्श का चुनाव प्रायः वांछनीय होता है । आंकड़ों पर आधारित तथ्य सदैव व्यावहारिक होते है, इसलिए यह आवश्यक है की आँकड़ें कहा से प्राप्त करें । इसके पहले न्यायदर्श तय करना पड़ता है । शिक्षविदों के अनुसार शोध रूपी भवन का आधार न्यायदर्श ही है जितना मजबूत आधार होगा, शोध उतना ही पुष्ट होगा ।

"गुड एवं हैट के अनुसार जैसा की नाम मे स्पष्ट
है की नायेदश एक बड़े समग्र को छोटा प्रतिनिधि है । "

कर्लिंग के अनुसार – " प्रतिदर्श जनसंख्या या लोगों मेँ से लिया गया कोई भाग होता है जो जनसंख्या या लोक प्रतिनिधि के रूप मेँ कार्य करता है । "प्रस्तुत अध्ययन मेँ शोधार्थी मेँ न्यायदर्श चयन "यादृच्छक न्यायदर्श" विधि से किया गया है। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश के भोपाल शहर मेँ स्थिति उच्च माध्यमिक विधलयों के कुल 60 विधरथियों को सम्मिलित किया था ।

3.3 क्रिया विधि –

प्रयोग के लिए सवेनदंशील बढबा देने के लिए कक्षा 8 तक के छात्रों (आश्रित)की उपलब्धि मेँ व्रद्धि पर भूगोल के शिक्षण (स्वतंत्र) मेँ ई -सामग्री की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए इस अध्ययन मेँ उपलब्धि परीक्षण और बुद्धि परीक्षण के बाद परीक्षण नियंतरण समूह डिजाइन का उपयोग किया सभी संभावित पहलुओ मेँ नियंतरण समूह और प्रोगात्मक समूह की तुलना की गयी नियंतरण समूह के लिए भूगोल का शिक्षण ई -कॉन्टेन्ट समूह को

पारंपरिक पद्धती के माध्यम से पढया जाता था और प्रयोगतमक समूह ई -कंटेन्ट के संपर्क मेँ था ।

3.4 प्रायोगिक विधि

1. पोस्ट टेस्ट (नियंत्रणीय डिजाइन)
2. सैम्पल (नमूना)-

- रैंडम तकनीक
- नमूने की संख्या -60
- प्रायोगिक -30
- रैडम -30

3.3 शोध के चर –

निममलिखित चारों का उपयोग प्रस्तुत अध्ययन के लिए किया गया था –
स्वतंत्र चर -ई कंटेन्ट
आश्रित चर – विधीयर्थी

3.4 शोध मे प्रयुक्त उपकरण –

किसी भी शोध कार्य मेँ उपकरणों का बहुत महत्व होता है क्योंकि इन उपकरणों के मध्यम से ही आवश्यक आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं उपकरणों का चयन है उपयोग बड़ी सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए जिससे परिणाम की विश्वसनीय पर संदेशह ना किया जा सके । उपयुक्त तथ्यों को ध्यान मेँ रखते हुए पूर्व कथित परिकल्पनाों से संबंधित निममलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया ।

- भूगोल शिक्षण मेँ ई -कंटेन्ट की प्रभावशीलता – ई कंटेन्ट की प्रभावशीलता
- अन्वेषक द्वारा तैयार और मानवीक्रत उपलब्धि परीक्षण
- विधयार्थी की प्रतिक्रिया

3.7 प्रदत का संकलन-

प्रदत का संकनल के लिए 08 दिन का समय लगा था । 08 अप्रैल से 04 मई तक शोधकर्ता दुबारा प्रदत्त संकलन कार्य किया गया था । प्रस्तुत शोध कार्य हेतु आवश्यक आंकड़ों का संकलन चयनित विद्धधालय के प्राचार्य से अनुमति प्राप्त कर के विधरथियों से किया गया था । विधधलाय के 60 छात्र -छात्रों पर प्रत्यय संकलन किया गया था ।
कक्षा अध्यापक के सहयोग से कक्षाओ मेँ जाकर इस शोध उद्देशय से विधयाथियों को अवगत कराया ,व तथा उन्हे विश्वास दिलाया की उनके द्वारा
प्रदान की गई जानकारी गोपनीय राखी जाएगी ,तथा उसका उपयोग केवल शोध कार्य ले लिए होगा ।
प्रदत संकलन के लिए विधधरथियों को एक हाल मेँ निश्चित आँराल पर क्रमबद्ध ढंग से बिठाया गया था । सर्वप्रथम उन्हें उपलब्धि परीक्षण हल करने के लिए दिया गया था । इससे

संबंधित निर्देश भी दिए गए थे। साथ ही कुछ विधरथियों द्वरा पूछे गए प्रश्नों का समाधान किया गया था ।
उपलब्धि परीक्षण होने के पश्चात विधयाथियों से परीक्षण प्रपत्र संकलन कर लिया गया था । तत्पश्चात प्रतिक्रिया परीक्षण प्रपत्र भरने के लिए दिया गया , आवशयक निर्देश देकर एवं उनकी शंकाओं का समाधान करने के लिए पश्चात उनके प्रपत्र भरने का अनुरोध किया तथा भरे हुए प्रपत्र को संकलित लिया गया था

3.8 संखिकी का उपयोग-

- प्रदत के विषलेशन हेतु 't' टेस्ट एवं सह संमबन्ध गुणांक (r) का प्रयोग किया गया है ।
- 8 वी कक्षा के छात्र एवं छात्रों की ई कंटेन्ट मे प्रभावशीलता अध्ययन हेतु 't' का उपयोग किया गया है ।
- छात्र -छात्रों के मध्य ई कंटेन्ट की उपलब्धि हेतु पोस्ट टेस्ट का उपयोग किया गया।
- विद्धथियों की ई कंटेन्ट की प्रभावशीलता एवं उपलब्धि रुचि के मध्य से संबंधित हेतु (कार्ल पियरसन के सहसंबंध) का उपयोग किया गया ।